उन्नति की राहे

राजस्थान के उदयपुर जिले की झाडोल प.स. के गांव गालदर का गरीब आदिवासी किसान भेरुलाल पिता धुलाजी गरासीया सन् 2006 तक अपनी पैतृक जमीन जो लगभग 6 बीघा है पर परम्परागत तरीके से खेती करके अपना जीवन यापन मुश्किल से कर रहा था। भेरुलाल अपनी पत्नी व 4 बच्चे के साथ गुजारा करने में काफी कठीनाई महसुस करता था परम्परागत खेती में वह खरीफ में मक्का व उडद की तथा रबी में गेंहुं तथा सरसों की खेती करता था भेरुलाल ने 9 वीं कक्षा तक पढाई कर रखी है ओर उसके मन में शुरु से ही कुछ कर गुजरने की तमन्ना भी थी पर उसके पास संसाधन व तकनीकी ज्ञान की कमी की वजह से वह कुछ कर नहीं पा रहा था। सन 2006 में बायक संस्था द्वारा संचालित नाबार्ड टीडीएफ परियोजना की ओर से बाडी परियोजना चालु की गई जिसमें किसानों को 30 फलदार पोधों का वितरण किया जा रहा था । भेरुलाल ने इस परियोजना के बारे में सुना तो वह बायफ संस्था के कार्यालय आकर उसने इसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी ली इस परियोजना व बायफ संस्था की जानकारी के पश्चात भेरुलाल को अपना सपना सच होता नजर आया।

तब भेरुलाल ने ठान लिया कि अब मुझे अपना सपना साकार करने से कोई नहीं रोक सकता है शुरुआत में वह अपने खेत पर 25 आंवला व 5 आम के पौधे लगाये ओर निरन्तर बायफ संस्था के सम्पर्क में रहा जिससे उसको तकनिकी ज्ञान मिला जैसे खेत में वाडी के साथ कौन–कौन सी फसलें लगा सकते है। किस किस्म की पैदावार अधिक होती है। कीट व बीमारी नियन्त्रण कैसे करते है इत्यादि भेरुलाल किसी भी तरह का प्रशिक्षण लेता तो उसे वह अपने खेत पर करके जरुर देखता जिससे उसका आत्मविश्वास बढा।

सन् 2007 में भेरुलाल ने बायफ संस्था से उन्नत चुल्हे व रसोई घर बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया और हाथों हाथ अपने घर पर जाकर उन्नत चुल्हा व रसोई घर तैयार किया तथा संस्था के प्रतिनिधियों को ले जाकर दिखाया जब संस्था के प्रतिनिधियों ने उसकी लगन देखी तो उसे इस क्षेत्र में लोगों के घर पर उन्नत चुल्हा बनाने का कार्य सोपा। भेरुलाल ने तन मन

से लोगों के उन्नत चुल्हे बनाये जिससे उसको अच्छी खासी आमदनी हुई साथ ही साथ

सामाजिक मान भी बढा। उसी समय संस्था के केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण चालु किया तो भेरुलाल ने तुरन्त यह प्रशिक्षण लिया ओर अपने घर पर ही केंचुआ खाद बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया शुरुआत में तो केंचुआ खाद का प्रयोग अपनी जमीन में ही किया ओर उसके परिणाम देखा तो वह चकित रह गया धीरे–धीरे वह इस कार्य को व्यावसायिक रुप दिया।

बायफ संस्था द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों से जानकारी लेकर भेरुलाल ने सोचा कि क्यों न सब्जीयों की खेती कि जाये तो वह बायफ संस्था के कृषि विषेशज्ञों से मिला और सब्जीयों की उन्नत खेती जानकारी ली। ओर वह सब्जियां उगाने लगा। जिससे उसे परम्परागत खेती (मक्का, उडद, गेंहु, सरसों) की अपेक्षा अच्छा मुनाफा हुआ और उसके घर की आर्थिक स्थिति मजबुत होने लगी। बायफ संस्था के प्रतिनिधियों ने जब उसकी लगन देखी तो उसे फलदार पौधों की नर्सरी तैयार करने की सलाह दी ओर उसका महत्व समझायाः

जब भेरुलाल ने नर्सरी की जानकारी ली तो उसे यह एक अच्छा आजिविका को ओर उन्नत

करने का स्त्रोत लगा। क्योंकि इसमें उसे बहुत कम जगह की, पानी की, व अन्य संसाधनों की आवश्यकता लगी, जबकि मुनाफा कई गुना लगा तो उसने धीरे धीरे नर्सरी का कार्य चालु कर दिया और आज उसके पास करीब 6 हजार आम के पौधे तैयार है। इसी दौरा

उसका सम्पर्क बी0टी0 कपास का बीज तैयार करने वाली कम्पनी से हुआ ओर कम्पनी ने उसकी मेहनत व लगन देखते हुए उसे बी0टी0 कपास का बीज तैयार करने का कार्य सौंपा जिसे वह आज बखुबी पुरा कर रहा है। वर्तमान समय में भेरुलाल कई कार्य एक साथ कर रहा है। जैसे नर्सरी तैयार करना, केंचुआ खाद बनाना इत्यादि! जिससे उसके रहन सहन, खानपान मं आश्र्चय जनक वृद्धि हुईः किसान भेरुलाल के जीवन में जो परिवर्तन हुआ है। वह इस तालिका के माध्यम से ओर भी स्पष्ट नजर आता है ।

विवरण	**सन् 2006–07** **(परियोजना से जुडने से पूर्व)**	**सन् 2010–11** **(परियोजना से जुडने के पश्चात)**
संसाधन		
1 मकान	कच्चा	आधा पक्का
2 कुआ	सामुहिक	निजि
3 डीजल पम्पसेट	सामुहिक	निजि
4 बोरवेल	नहीं था	स्वयं ने खुदवाया
5 दुधारु पशु	एक देशी गाय	उन्नत नस्ल की दो भेंस व एक गाय
खेती बाडी		
1धान्य फसलें	100	केवल घरेलु उपयोग हेतु
2बाडी	0	25 आंवला व 5 आम
3नर्सरी	नहीं थी	6000 आम के पौधे
4सब्जियां की खेती	नहीं थी	लगभग 2 बीघा में
5 बी0टी0 कपास का बीज उत्पादन	नहीं थी	लगभग 1 बीघा में
तकनीकी ज्ञान	**कम था**	**उन्नत**
खान पान	साधारण मक्का की रोटी व कभी कभार सब्जी	पोष्टिक मक्का व गेहुं की रोटी फल सब्जी व दुध दही का रोजाना उपयोग
अन्य		
1 आटा चक्की	नही थी	अभी है।
2 परचुण की दुकान	नहीं थी	अभी है।
अनुमानित वार्षिक आय	30000 / रु0	100000 / रु0

उपरोक्त तालिका देखकर हम आसानी से अन्दाजा लगा सकते है कि एक जूनूनी इन्सान को यदि उसको प्रर्याप्त मात्रा में संसाधन व तकनीकि ज्ञान मिल जाये।तो वह कितनी उन्नती कर सकता है। भैरुलाल की पत्नी श्रीमति रुबी बाई इस कार्य में निरन्तर इनके साथ थी। पति की लगन व मेहनत से प्रोत्साहित होकर रुबी बाई ने भी बायफ संस्था द्वारा संचालित विभिन्न महिला प्रशिक्षणों में भाग लिया जिसके फलस्वरुप उन्होंने एक स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) का गठन किया एवं इस समूह की अध्यक्ष बनी इस समूह की सहायता से आज रुबी बाई अन्य दुसरे गांव की महिलाओं की विभिन्न प्रकार से सहायता कर रही है। जिससे आज रुबी की सामाजिक प्रतिष्ठा बढी है। भेरुलाल के जीवन में हम इन 4 सालों पर नजर डालते है तो यह कहावत सटीक बैठती है।

यदि इंसान सच्चे मन से ढुढता है
तो भगवान भी मिल जाता है।